आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 16 | उदयपुर रविवार 01 सितम्बर 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अपने उद्गम से कटकर न तो वर्तमान की प्यास बुझाई जा सकती है और न भविष्य से हाथ मिलाया जा सकता है।

लोककलाओं का भविष्य

- रामनारायण उपाध्याय -

लोकसंस्कृति भूत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में मजबूती से अपने पांव टिकाकर भविष्य की ओर बढ़ने की अदम्य लालसा रखती है।

लोकसंस्कृति का जन्म लोक की अदृश्य जीवनधारा से सटा हुआ है। वह नदी की तरह अपने मार्ग आने वाली कठिनाइयों के पर्वतों को काटकर भी आगे बढ़ी है और सुविधाओं के पुल को भी पार कर अपने पांव चल समुन्दर से जा मिली है।

उसके संघर्षों में कंकर से शंकर बनाने की क्षमता है। ऊंचाइयों पर से छलांग लगाने के स्थान को सुरम्य दर्शनीय जलप्रपात में बदलने की सूझ है। कहीं पतन भी सुन्दर हुआ है लेकिन सतत् प्रवहमान नदी या पवर्त की चोटी से धरती की बेटी को चूमने का दृश्य किसका मन न लुभा लेगा।

यह इसलिए कि नदी ने उद्गम से जुड़कर ही समुद्र में जा मिलने की शक्ति पाई है। अपने उद्गम से कटकर न तो वर्तमान की प्यास बुझाई जा सकती है और न भविष्य से हाथ मिलाया जा सकता है। लोकसंस्कृति इसलिए जीवन्त रही है कि वह भूत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में मजबूती से अपने पांव टिकाकर भविष्य की ओर बढ़ने की अदम्य लालसा रखती है।

समय को डमरू की उपमा दी गई है। डमरू का मध्य भाग पतला और शेष दो भाग समान होते हैं। समय का भी वर्तमान क्षण अत्यन्त नाजुक है। शेष भाग भूत और भविष्य तो समान होते हैं। जिसकी वर्तमान पर पकड़ मजबूत होती है वह जब डमरू की तरह समय को हाथ में लेकर बजाता है, उससे भूत और भविष्य दोनों बजने लगते हैं। जो बीज धरती से गहराई से जुड़ा होता है उसे अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित होने से कौन रोक सकता है? चिन्तनीय तो वह अभिजात्य वर्ग है जो अपनी जमीन से कटकर वर्तमान की भोगवादी संस्कृति को ही अपना जीवनमूल्य समझ रहा है। लोक की संस्कृति लोक के शताब्दियों के अनुभव, रहन-सहन, हास-उल्लास, दुःख-व्यथा, रीति-रिवाज, विश्वास और मान्यताएं तथा गीत और कलाओं से आगे बढ़ती आई है। उसमें जो अनावश्यक है वह पुराने पत्ते की तरह अपने आप झड़ जाते हैं।

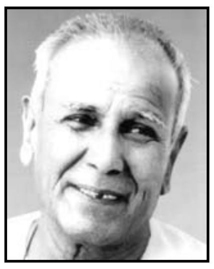

राजा रघु के समय गन्ने के खेत में काम करने वाली स्त्रियां रघुवंश की कीर्ति के जो गीत गाती थीं उनसे प्रेरणा लेकर वाल्मीकि की रामकथा आगे बढ़ी है। प्रकृति रचना के सम्बन्ध में ऋग्वेद में जो कल्पनाएं संजोई गई हैं, उनका प्रेरणास्रोत आदिम लोककथाएं रही हैं।

मनुष्य का जीवन गीतों में से जन्म लेता। गीतों में तैरता और गीतों में ही समाता आया है। गीत श्रम को हल्का करने में अपना योगदान देते आये हैं। एक किसान जब खेत में हल चलाता है तो गीत के साथ। मजदूर सड़क पर गिट्टी कूटता है तो गीत के साथ।

स्त्रियां चक्की चलाती हैं या दही बिलौती हैं तो उनके साथ गीत की कुछ कड़ियां भी बिलौती आई हैं। बड़ी भोर में उठकर चक्की चलाने वाली महिला का, गीत की कड़ियों पर चक्की का मूंठ पकड़ हाथ घूमता है तो उसमें उसके थिरकते अंग-सौष्ठव को देखकर कौनसा बाल्मीकि या कालिदास मुग्ध नहीं हुआ होगा?

कोई भी कलाकृति सुन्दर नहीं होती जब तक उसका श्रम में से जन्म न हो। हल चलाते किसान, कुदाली चलाते मजदूर और नाव खेते मल्लाह सुन्दर कलाकृतियों के जनक रहे हैं। आदिकाल का आदिमानव जब वर्षा की ऋतु में किन्हीं पर्वत-गुफाओं में घिर गया तो उसने अपने जीवन में देखे चित्रों को गुफा-चित्रों के रूप में संजो लिया। गीत की तरह ये चित्र भी मनुष्य के निराश क्षणों को आनन्द में बदल देने की क्षमता रखते हैं। प्यास तो प्लास्टिक से बने गिलास से पानी पीकर भी बुझाई जा सकती है लेकिन पानी पीने का पात्र भले ही मिट्टी, लकड़ी या धातु से बना हो, यदि सुन्दर कलात्मक स्वरूप लिये हो तो उससे मन की भी प्यास बुझती है।

गांधीजी ने एक बार मीरा बहन 'मिस स्लेड' की झोंपड़ी देखकर कहा था कि तुम्हारी झोंपड़ी एक सुन्दर काव्य है कारण कि यह तुम्हारे सुन्दर हाथ से बनाई गई है। जहां पसीने का संस्पर्श होता है, वहीं निर्मल ओस की बून्द की तरह जिन्दगी मुस्कराती है।

लोककलाएं अब बच्चों को सुनाने वाली परी की कहानी से आगे बढ़कर शोषणकारी व्यवस्था के खिलाफ अपने पांव जमाने लगी हैं। महज दो वाक्यों के माध्यम से एक कथा ने समूची व्यवस्था को उधेड़कर रख दिया है। कथा के बोल हैं- 'शेर ने बकरी से पूछा, क्यों री बकरी मांस खायेगी? बकरी बोली, मेरा ही बच जाए तो बहुत है।' लोककला की दुकानदारी करने वाला वर्ग आज लोककला के संरक्षण की बात उठा रहा है। लोककलाओं का सिर्फ इतना ही कहना है कि करने के लिए आपके पास बहुत से काम हैं, भगवान के नाम पर हमारा उद्धार मत कीजिये, हम अपना उद्धार आप कर लेंगी।

मूल प्रश्न बदलते हुए परिवेश में लोककलाओं के भविष्य का है। यह नहीं है कि आदिवासी बुशर्ट या पैंट पहनता है या लंगोटी लगाता है। वो अपनी प्रेयसी को प्लास्टिक की कंघी देता है या मोतियों की माला; जब तक उसमें प्यार का रिश्ता कायम है अपने ढंग से जीने की जिजीविषा है, तब तक कोई सा भी माध्यम उसे अपनी जीवन संस्कृति से जुदा नहीं कर सकता। उसमें समय के साथ अपने आपको बदलने की क्षमता है। इसके बावजूद भी वह अपने जीवनमूल्यों के प्रति सजग है।

गवरी में प्रदर्शित कालू कीर

आदिवासी भीलों के अनुष्ठानिक खेल गवरी में कालू कीर का सांग बहुत प्रसिद्ध है। शोध के दौरान कई गवरी खेल देखने, पूछने के बावजूद कालू कीर के सम्बन्ध में प्रामाणिक तथ्य नहीं जान सका। यह खेल कीर जाति से सम्बन्धित है। इस जाति के लोग पानी किनारे तरबूज-खरबूज-सिंघाड़ा की खेती तथा मछली पकड़ने का व्यवसाय करते हैं।

गवरी खेल में कालू कीर की गाथा, जिसे भारत नाम से जाना जाता है, में कहा गया है कि मानसरोवर में देवी अम्बाव की अंगूठी गिर जाती है जिसे माछला निगल जाता है। फलस्वरूप उस माछले को मारकर अंगूठी प्राप्त करने का जिम्मा कालू नामक कीर को दिया जाता है। कालू तथा उसकी जोड़ायत किरण सूत्रधार जिसे कुटकड़िया कहते हैं, को कार्य के लिए अपनी असमर्थता जाहिर करते हैं।

कारण बताते हैं कि हठिया राजा के राज में हमें भय लगता है। देवी यह सुन उन्हें वचन देती है कि हठिया से भय खाने की जरूरत नहीं है। कोई तुम्हारा बाल बांका नहीं करेगा। मैं सहायता के लिए हर समय तुम्हारें साथ रहूंगी। इस पर दोनों माछले को पकड़ उससे अंगूठी प्राप्त करते हैं।

सन्त साहित्य के मान्य विद्वान बजेन्द्रकुमार सिंहल ने अपने गहन अध्ययन से श्रीमद् भागवत के हवाले से बताया कि कालू सतयुग का जीव है। यह पहुंचा हुआ सन्त था। स्वयं नारदजी ने इनसे दीक्षा ली। कालू की पैदाइश राजा वेन की जांघों के मर्दन से हुई। नाटे कद का होने से इसका नाम कालू पड़ा। भक्तमालकार कलियुग के सन्तों-भक्तों का अस्तित्व बारह सौ-तेरह सौ वर्षों का मानते हैं। कालू कीर भी माना हुआ सन्त-भक्त था। इसका काल गोरखनाथ, रामानुज, निम्बार्क जैसे सन्तों के समय का, करीब के आसपास का माना जाता है।

सिंहलजी ने बताया कि कालू कीर ने सन्त बनने के बाद जो कुछ लिखा वह जगन्नाथजी रै गुणगंजनामा तथा सबरंगी सरह चिंतामणी में उपलब्ध होता है। इन संग्रहों का संपादन काल विक्रम संवत् 1684 और इसके आसपास का है। कीर समाज के व्यक्ति कालू का जन्म भादवी बीज को मानते हैं। गवरी का खेल भी राखी, रक्षाबंधन के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर चालीस दिन तक प्रदर्शित किया जाता है।

भक्तमाल की कथा का उल्लेख करते हुए सिंहलजी ने बताया कि बादसाही तलाव में कालू माछली पकड़ने उतरा कि बादशाह के लोगों को भनक लग गई और वे वहां पहुंच गये। उन्हें देख कालू बड़ा घबराया कि या तो उसे जेल में ठूंस देंगे या मौत के घाट उतार देंगे। इससे बचने के लिए उसने अपने शरीर पर तिलक छाप लगा, आंखें बन्द कर पानी में चुपचाप खड़ा हो गया। बादशाह के लोगों ने उसे देख जाना कि यह तो कोई पहुंचा हुआ तपस्वी दिखता है। उन्होंने तत्काल बादशाह को सारे हालात से विदित किया। इस पर बादशाह अपने लवाजमे के साथ आया और उसे मोहरें भेंट की।

इस घटना से कालू बच तो गया पर उसे मन ही मन पछतावा रहा। उसने महसूस किया कि उसकी आत्मा उसे धिक्कार रही है कि ऐसा ढोंग क्यों किया। इसी गहरे सोच ने उसे ईश भक्ति में मोड़ दिया। वह साधना में डूब गया भक्त बन गया। एक साखी में यह उल्लेख द्रष्टव्य है-

बानौ बड़गोपाल कौ, तिलक छाप गळ माळ।
काळू कहतो जम डरै, भै मानैं भोपाल।।

गुणगंजनामा में संग्रहीत कालू की दो साखियां इस प्रकार हैं-

पर्वत से नाहिं कहै, नाहीं धरणि आकास।
काळू कोई जन कहै, जाके घट परकास।।
जो दुखदाई आपको, ताकौं इहिं विधि मार।
बहुत सजा काळू कहै, दिल से देई उतार।।

ब्रज के वर्षापरक लोकगीत

-प्रो. उषा यादव-

कालिन्दी का कूल, कदम्ब की छांह और राधा-कृष्ण का नित्य लीला-बिहार।

ब्रज के कण-कण में आज भी यह कलित झांकी समाहित है। उस पर यदि वर्षा ऋतु की रिमझिम फुहारों की छटा हो, तब तो बात ही क्या। सम्पूर्ण ब्रजमण्डल एक नई स्फूर्ति से उमंगित हो उठता है। श्रावण मास लगते ही एक ओर मन्दिरों में हिंडोले पड़ने शुरू हो जाते हैं तो दूसरी ओर ब्रजांगनाओं के कलकण्ठ से निःसृत लोकगीतों का माधुर्य मथुरा-वृन्दावन की गलियों में प्रवहमान हो उठता है। निश्चय ही ब्रजक्षेत्र में वर्षापरक लोकगीतों की एक अनूठी लड़ी विद्यमान है। ये लोकगीत शृंगार के संयोग वियोग पक्ष से सम्बद्ध हैं। पहले संयोग पक्ष को लें।

वर्षा ऋतु में चारों ओर फैली हरियाली एक मादक वातावरण की सृष्टि करती हुई जनजीवन में एक नया उल्लास जगा देती है। कोयल की कूक, दामिनी की दमक और चातक-मोर आदि का मीठा कलरव भी रसिकों की शृंगारित चेष्टाओं के लिए अनुकूल पृष्ठभूमि हो जाता है। इसलिए ब्रज के वर्षापरक लोकगीतों में शृंगार के इन उद्दीपन विभावों का व्यापक चित्रण है। मोर की आकृति खचित नथ पहनकर श्रीराधा रानी का रूप शृंगार अप्रतिम हो उठता है-

राधा रानी के नथ पै मोर, नाचैं थई-थई।
नील रंग सारी, सुरंग रंग चोली,
लहंगे पै लग रही कोर नाचै।
बड़े-बड़े नैनों में झीनो-झीनो सुरमा,
काजर की पड़ि रही डोर, नाचै,
गोरी-गोरी बहियां हरी-हरी चूड़ियां,
मेहंदी लगी है चितचोर, नाचै,
घूंघट की ओट करि, नौनों की चोट करि
मोह लियो नंदकिसोर नाचै,

राधा ने यदि कृष्ण को मोहने का उपक्रम किया है, तो रसिक शिरोमणि अनन्य लीलाधारी कृष्ण भला कैसे पीछे रहे? श्रावण मास में कृष्ण ने जब मनिहार बनने की लीला दिखाई तो इसका आनन्द ब्रज की गलियों में फैल गया-

मनिहारी का भेस बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया
झोली कांधे धरी, उसमें चूड़ी भरी,
ब्रज गलियन में सोर मचाया, श्याम.....
राधा ने सुनी, ललिता ने कही,
मोहन को महल बुलाया, श्याम.....
चूड़ी लाल न पहिरुं, चूड़ी हरी न पहिरुं,
मुझे श्याम रंग मनभाया, श्याम.....
वो पहनने लगी, वो पहनाने लगे,
नैनन में प्रेम समाया, श्याम.....

न सिर्फ मनिहार, अपितु कभी-कभी तो कृष्ण लिहार के स्त्रीवेश में भी राधा से मिलन हेतु निकल पड़ते हैं-

नख-सिख गहना पहर के, करि सोलह सिंगार
बलिहारी नंद-नंद की, बन गए नर से नार।
बन गए नर से नार कि झोली कंधा पै डारी
बन गए नंदलाल बिहारी कि लीला गुदवाय लेओ प्यारी।

संपूर्ण ब्रजभूमि ही कन्हैया की लीलास्थली है। पूरे श्रावण मास में मथुरा-वृंदावन के मंदिरों में होने वाली इन रासलीलाओं के दर्शन-लाभ के लिए देश भर से भक्तों की भीड़ उमड़ उठती है। रस के साधारणीकरण का यह दृश्य-श्रव्य भक्तों को खूब लुभाता है। इसी क्रम में श्याम रंगरेजन बनकर भी श्रीराधा की पौरी में पहुंचते हैं-

बन गए स्याम सुघर रंगरेजन, चूंदर रंगवाय लेउ प्यारी।
पहुंच गए राधा की पौरी, खबर करवै ललिता दौरी
तुरत रंगरेज लई बुलाय, पांय लगि बैठि गई हरसाए,
कही राधाजी ने समुझाए।
चूंदर चमकीली रंगौ रंगरेजन सुकुमारि।
बीच छबरिया रंग भर, कौन अजब किनारी।
खोल पिटारी धरी अगारी रंगत न्यारी-न्यारी, बन गए....

वृंदावन में इस वर्षाकालीन रास की इतनी महिमा है कि रसिया लोकगीत में एक युवती अपने देवर से मनुहार करती है-

अरे मोहे वृंदावन को रास हो रास, दिखा ला मोहे देवरिया,
मेरी पार परोसन जाई रही, भारी शृंगार बनाई रही
अरे जा री ददिया सास, हो सास दिखा ला-
मेरी दौर जिठानी जाई रही भारी पकवान बनाई रही
अरे मैं बैठी रहुं उदास, उदास, दिखा ला
तोकूं सूभ रहौ मेलो ठेलो
मेरे पास नहीं है इक धेलो
अरे क्यों कहकर करे उदास, हो उदास दिखा ला
दाम को नाही है कहुं टोटो
एकऊ देखन को है टोटो
अरे मोपे रूपिया धरै, पचास, हो पचास, दिखा ला

ब्रज के वर्षापरक लोकगीतों में मल्हार का अपना अलग आकर्षण है। यमुना तट पर, कंदब के वृक्ष के नीचे, हिंडोला झूलते हुए भगवान कृष्ण और श्रीराधाजी की छवि वर्णनातीत है। ऊंची पेंग लेने के कारण कृष्णजी का मुकुट झुक जाता है और पूरा यमुना तट सोभायमान हो उठता है-

देखौ री मुकुट झोका लै रह्यौ, लै रह्यौ जमुना के तीर।
कौन बरन रानी राधिका, काहा घनस्याम
गौर बरन रानी राधिका, काहा र पहिरैं घनस्याम
काहा र पहिरैं रानी राधिका, काहा र खामैं घनस्याम।
चूनर पहिरैं रानी राधिका, पीताम्बर घनस्याम
काहा र खामैं रानी राधिका, काहा र खामैं घनस्याम
माखन खामैं रानी राधिका, दधि माखन घनस्याम।

राधा कृष्ण को हिंडोला झूलते देखकर यहां सखियों का वार्तालाप वर्णित है। एक सखी उनके वर्ण, वेशभूषा और खानपान को लेकर प्रश्न करती है और दूसरी सखी उत्तर देती है।

ब्रज के वर्षापरक लोकगीत शृंगार के वियोग पक्ष से भी जुड़े हुए हैं। वियोगिनी नायिका अपने परदेश गए पति को संदेश भेजती है-

छप्पर पुराने मेरे पिय है गए जी कोई तड़कन लागे बांस,
अब घर आ जा धन के साहिबा जी।
कबहुं न बटि दई मेरे पिया जेबरी जी,
कोई कबहुं न बुनि दई खाट,
कबहुं न सोए मेरे पिया द्वै जने जी।
सावन बटि दई मेरी धन जेबरी जी,
कोई भादो में बुनि दई खाट,
कातिक सोए मेरी धन द्वै जने जी।
कौन रितु खइयैं मेरे पिया बाजरो जी, कौन रितु मुतिछर भातु,
कौन रितु खइयै झिलमिल सैंवई जी।
जाड़िन खइयै मेरी गोरी बाजरो जी कोई गरमिन मुतिछर भातु,
सावन खइयै झिलमिल सैंवई जी।
कौन रितु पिहरै मेरे पिया चुनरी जी कौन रितु झिलमिल घाट,
कौन रितु औढ़ो मेरी गोरी लहरिया जी।
जाड़िन पहिरै मेरी गोरी चुनरी जी,
कोई गरमिन झिलमिल घाट,
सावन औढ़ो मेरी गोरी लहरिया जी।
कौन रितु रहियै मेरे पिया माइकै जी
कोई कौन रितु रहियै ननसार।
कौन रितु रहियै मेरे पिया सासुरै जी।
सावन रहियै मेरी गोरी माइकै जी
कोई गरमिन रहियै ननसार,
जाड़िन रहियै मेरी गोरी सासुरै जी।

इस लोकगीत में विरहिणी नायिका अपने पति को संदेश भेजती है कि मूसलाधार वर्षा को घर का पुराना जीर्णशीर्ण छप्पर सहन न कर सकेगा। बांस भी टूट गए हैं। अब तो तुम घर आ जाओ। पत्नी की मनुहार सुनकर पति घर लौट आता है और रस्सी बुनकर खाट बनाकर दोनों जनों के एक साथ सोने की इच्छापूर्ति कर देता है। पत्नी के खानपान, वेशभूषा और निवास से जुड़ी अनेक शंकाओं का समाधान भी कर देता है। पर ऐसा सौभाग्य हर विरहिणी को नहीं मिलता। ब्रज के एक अन्य प्रभावशाली लोकगीत में उस पति वियुक्त की पीड़ा है जो वर्षा ऋतु में अपने पति को ढूंढ़ने निकल पड़ी है और दर-दर की ठोकरें खा रही है। अपने दुर्भाग्य पर दुख होने के साथ-साथ उसे पति से भी शिकायत है कि द्वार पर गंगा बहने के बावजूद हतभागा कुए का जल पीने के लिए क्यों गया? जाहिर है, पर नारी का आकर्षण न होता, तो वर्षा में पति घर न लौट आता-

चलती नगरिया मैं भूली रे डगरिया, कैसी करी मेरे राम रे।
जिनके द्वारैं गंगा बहति है, वे काहै कूप नहांइ रे।
जिनके घर में सुंदर रनियां, वे काहै पर घर जांइ रे।

ब्रज क्षेत्र में सावन मास में गाये जाने वाले लोकगीत की एक लंबी शृंखला है। मोरा, चन्द्रावलि, निबिया, धोबी, श्याम रंग सुंदरी, मरबिन बांधे रहता है, इन लोकगीतों में मोरा की मार्मिकता तो ऐसी है, जो नयनों को छलछलाने पर विवश कर देती है-

चंदा की चांदनी मोरा निर्मल रैन, राजा की रानी पानी नीकरी जी।
सोने की गगरी मोरा रेसम डोर, रतन जड़ाऊ धन की ईडुरी जी।
भरौई भरायो मोरो दियो लुढ़काय, पंख पसारै मोरा जलु पिए जी।
लेउ न री सासुल गगरी उतारि, नाही तौ फोये चौरे चौक में जी।
कौने तो बहुअरि मेरो बोलेहे, कौने तो हिए है उलाहने जी।
तुमरे तो बागनि सासुलि कारो री मोर,
बाकी कुहक मेरे मन बसी जी।
उठि-उठि बेटा मेरे बांधो तरवारि,
तेरी धन रीझी कारे मोर पै जी।
झटपट राजा मेरे बांधि तरवारि,
तेरी धन रीझी कारे मोर पै जी।
एक बन नाधौं राजा दूजौ बन नाधि,
तीजे बन मोरो कुहाहियौ जी।
एक गुल्लौ मारो राजा दूजौ गुल्ला मारि,
तीजे पै मोरा बिनारियौ जी।
भोरौं रे मूरौ मोरा लियो लटकाय
गोरी क आगै मोरा धरि दियोजी।
काटौ बनारौ मोरो दियो है चढ़ाई,
सौने के ढक्कन मोरा ढकि दियोजी।
राधौं रंधायो मोरा लियौ है उतारि,
परसत में मोर गढ़ाई देंउ जी।
सौने का मोरा सासुल चौर लै जाई,
बाकी कुहक मेरे मन बसी जी।
जो तोई बहुअर मेरी मोरा की साद,
अंचर मोरा लिखवाइ द्वै जी।
चुनरी कौ मोरा सासुल धुरि फटि जाई,
बाकी कुहक मेरे मन बसी जी।

उपर्युक्त लोकगीत की मीठी लय और बंकिम भंगिमा के बीच एक समूचा दृश्य-लोक हमारी आंखों में सज उठता है। हाथ में सोने का घड़ा, रेशम की रस्सी और रत्नजड़ित ईडुरी के साथ एक राजा की रानी चांदनी रात में जल भरने के लिए महल से निकली है। वह कुएं पर पहुंचकर मोर के भरा कलश ढुलका देने पर दुबारा जल भरती है और महल लौट आती है। अपनी मां के बहकावे में आकर राजा उस मोर को मार देता है। रानी की उदासी देखकर जब सास उसे सोने का मोर दिलाने तथा वस्त्र पर मोर कढ़वा देने का लालच देती है तो रानी इंकार कर देती है। उसका अनमनापन सोने के मोर अथवा मयूरखचित साड़ी से कैसे मिटता? उसे तो मोर की बोली ही प्रिय थी। काले बादलों को देखकर पंख फैलाकर नाचने वाले मोर का वध इस गीत को मार्मिकता से भर देता है।

ब्रज में सावन मास में गाये जाने वाले 'लहरिया' नामक लोकगीत में उस विरहिणी का चित्र है जो अपनी गांठ से रकम निकालकर एक संदेशवाहक को पति के पास भेजती है पर वह नहीं आता। इसलिए वह मां की मृत्यु की सूचना पति को पहुंचाती है पर पति भी कमाल का है। उत्तर देता है, अच्छा हुआ घर की बला टल गई। भवज की मौत पर उसकी प्रतिक्रिया है कि बंटवारे की खातिर झगड़ने वाली चल बसी तो अच्छा रहा। बहन की मृत्यु के संदेश से भी वह विचलित नहीं होता पर पत्नी की मौत की खबर पाकर तत्काल घर लौट आता है। वहां सब कुछ सुव्यवस्थित देखकर पत्नी पर खौफ उतारता है कि तुम्हें ऐसा छल नहीं करना चाहिये था। इस लोकगीत की आरंभिक पंक्तियां इस प्रकार हैं-

पांच टका दऊंगी गांठि के है कोई लस्कर जाय,
लहरिया सब रंग भीजै धन को डोरियो।
वा लसकरिया तें यों कहो, घर में मरी है मेरी माय
माय मरी मरि जानि दै, घर की टली है बलाय।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि ब्रज के वर्षापरक लोकगीतों की इन्द्रधनुषी छटा कहीं अत्यंत मनोरम है। हिंडोलों की शोभा, कहीं नाचते मोर की छवि, कहीं चूड़ी, बिंदी, लहरिया का जादू और कहीं विरहिणी के आंसू इनमें पिरोय हुए हैं। सब कुछ इतना मनोरम है जिसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है।

स्मृतियों के शिखर (83) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रसवंती कलाओं के कीर्ति-कौस्तुभ थे डॉ. सिंघवी

कुछ लोग होते हैं जो ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में गहरी दखल रखते हैं तो कुछ लोग अन्यान्य क्षेत्रों में निष्णात होते हुए भी किसी एक क्षेत्र को ही अपना कर्म-क्षेत्र बनाते हुए गहन बने रहते हैं। डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने सर्वाधिक ख्याति तो भारतीय संविधान के गहनतम अध्येता तथा विधिवेत्ता के ही रूप में अर्जित की किन्तु अन्य क्षेत्रों में भी उनकी पहुंच बराबर बनी रही। वे अच्छे विचारक, कवि, लेखक तथा कला-संस्कृति के संस्कारवान समायोजक थे। राजनीति में भी पूरा पड़ाव लिये थे। स्वभाव से वे बड़े मिलनसार, मृदुभाषी और मोहित मन वाले थे। सच में वे रसवंती कलाओं के कीर्ति-कौस्तुभ ही थे।

डॉ. सिंघवी से कब मेरा मिलना हुआ, ठीक से याद नहीं पर लेखन के कारण हम एक-दूसरे से परिचित छठे दशक में हो गये थे। माध्यम था कलकत्ता से प्रकाशित होने वाला 'विशाल राजस्थान'। इसमें मैं निरंतर लिखता-छपता था और जिन अन्यों को मैं इसमें पढ़ता रहा उनमें रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, भंवरमल सिंघवी तथा डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी प्रमुख थे।

डॉ. सिंघवीजी से गहरे रूप में जुड़ाव हुआ जब वे भारतीय लोककला मण्डल के अध्यक्ष बनाये गये। सन् 1952 से कलामंडल के अध्यक्ष पद को शोभित करने वालों में आर. आर. दिवाकर, बी. गोपाल रेड्डी, डॉ. वी.वी. केसकर, पृथ्वीराज कपूर और मोहनलाल सुखाड़िया रहे।

सुखाड़ियाजी के निधन के बाद डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी अध्यक्ष बनाये गये। अब तक जो अध्यक्ष रहे उनमें कपूर को छोड़ सभी राजनीतिज्ञ थे। डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी को अध्यक्ष बनाने के पीछे यही मंशा रही कि राजस्थान की रसवंती कला-संस्कृति के प्रति उनकी गहरी दिलचस्पी के साथ-साथ उसकी श्रेष्ठ परंपरा को देश-विदेश तक संवर्धित करने में उनका योगदान मिलेगा साथ ही कलामंडल की अब तक चली आ रही गतिविधियां उनसे संबल पाकर और अधिक प्राणवंत बनेगीं। राजस्थान के निवासी होने के कारण सिंघवीजी हमारे नजदीक रहेंगे और हर समय उनसे सलाह-मशविरा करने में सुविधा रहेगी।

कलामंडल के संस्थापक देवीलाल सामर का निधन 3 दिसम्बर 1981 को हुआ। उनके देहावसान पर डॉ. सिंघवी ने मुझे शोकगीत लिख भेजा। पत्र में उन्होंने लिखा कि इतना शीघ्र, यह सब कैसे हो गया, सूचित करें। गीत के लिए लिखा कि उनके पार्थिव देह के दाह-संस्कार, 4 दिसम्बर 1981 को इसकी रचना की गई।

मैंने अपने संपादन में कलामंडल से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'रंगायन' में इसे प्रकाशित किया। रंगायन का जनवरी-फरवरी 1982 का अंक देवीलाल सामर श्रद्धांजलि अंक के रूप में प्रकाशित किया गया था। इस अंक में सबसे पहले यही गीत छापा गया जो इस प्रकार है-

शोकगीत

(1)

देवदूत भेजा था विधि ने,
लोककला को मंडित करने।
वरदा सरस्वती ने भेजा,
युग की जड़ता खंडित करने।।

(2)

जन जीवन में, जनमानस में,
रूप और रंगों की छवि भर।
संस्कृति के दर्पण में उसने,
स्वप्न हमारे किये उजागर।।

(3)

मित्र, मार्गदर्शक, निर्देशक,
अभिनेता तुम, सूत्रधार भी।
द्रष्टा भी थे, स्रष्टा भी थे,
तुम शिल्पी भी, वास्तुकार भी।।

(4)

सूना लोककला का प्रांगण,
हमप्रभ, निष्प्रभ, मित्र तुम्हारे।
अंकित हृदय पटल पर सबके,
यश गाथा के चित्र तुम्हारे।।

(5)

शोक श्लोक बन जाय बंधुवर,
मृत्यु सृजन से बाजी हारे।
मूर्तरूप लें सदा मनोरम,
स्वप्न और संकल्प तुम्हारे।।

जब सामरजी की आदमकद प्रतिमा कलामंडल परिसर में स्थापित करने का निर्णय लिया गया तब सिंघवीजी ने मुझे इस गीत को किसी उचित जगह प्रतिमा के वहां देने को लिखा। गीत बड़ा होने के कारण कलामंडल की कार्यकारिणी ने प्रतिमा के पीछे की चारदीवारी पर इसे उत्कीर्ण करवा दिया।

सामरजी के निधन के बाद ही यहां के प्रबुद्धजनों, समाजसेवियों और संस्था-संचालकों को यह आभास होने लग गया था कि कहीं ऐसा न हो कि कलामंडल में संकीर्ण और अशालीन राजनीति प्रवेश कर जाए और यहां की जो कला-सांस्कृतिक गतिविधियां प्रभावी रूप से चल रही हैं उनमें टूटन तथा बिखराव आ जाए।

यह सोच कुछ प्रभावी व्यक्तियों ने मिलकर डॉ. सिंघवी को पत्र लिखा। पत्र लिखने वालों में पं. जनार्दनराय नागर जिन्होंने राजस्थान विद्यापीठ की स्थापना की और जिसे डीम्ड विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता मिली तथा स्वयं नागरजी उसके कुलपति बनाये गये। दूसरे थे भवानीशंकर उपाध्याय जो दर्शनशास्त्र के अध्येता, एडवोकेट एवं राजनीति में धुरंधर थे। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के अच्छे शिष्यों में उनका अग्रणी नाम था। तीसरे नंद चतुर्वेदी जो प्रख्यात कवि एवं चिंतक के रूप में ख्यातिलब्ध रहे। चौथे डॉ. प्रकाश जो सुखाड़िया विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे और पांचवें ब्रिजमोहन गोयल थे जो यशस्वी पत्रकार और दैनिक नवज्योति के ब्यूरो चीफ थे। अविकल रूप में यह पत्र यहां दिया जा रहा है।

उदयपुर
17 दिसम्बर 1981

आदरणीय डॉ. सिंघवीजी,

हम आपके साथ स्वर्गीय भाई देवीलालजी सामर की मृत्यु में शोकग्रस्त हैं और ऐसी रिक्तता का अनुभव करते हैं कि उसकी पूर्ति शायद संभव नहीं है। देवजी कोई फुर्सत के समय संस्कृति के श्रीवर्धक नहीं थे। वे लोकसंस्कृति के लिए समर्पित साथियों में से थे। वे इस देश की संस्कृति को लोकमंगल के साथ और जन के साथ जोड़ने वाले विचारकों में से हैं। हमारा विश्वास है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जाएगा, देवजी की स्मृति हम सबको उनके अधूरे काम पूरा करने का उत्साह देगी।

लोककला मण्डल का यह सौभाग्य और देवजी की अन्तर्दृष्टि है कि उन्होंने विश्रुत कलाधार्मियों के साथ-साथ कलामर्मज्ञ विद्वानों को भी अपने साथ जुड़ा रखा और उन्हें लोककला के बुनियादी सिद्धांत को परखने की दीक्षा दी। उन साथियों ने आजीवन उनके मार्गदर्शन में काम करने का संकल्प लिया और आज भी वे अदम्य उत्साह तथा लगन से श्री सामरजी का काम कर रहे हैं।

देवजी के इन अनुभवी साथियों में सबसे वरिष्ठ विश्वासपात्र और लगभग बीस वर्षों से सेवारत लोकसंस्कृति के मर्म को समझने वाले इनेगिने में से एक डॉ. महेंद्र भानावत हैं। उन्होंने पिछले वर्षों में लोकानुरंजन करने वाली कलाओं, त्यौहारों, मांडनों और दूसरे विषयों पर हजारों पृष्ठ की सामग्री को लिखा तथा सम्पादित किया है। अनेक ग्रंथों और रंगायन पत्रिका को सुसंपादित कर यश अर्जित किया है। वे लोकसंस्कृति से संबंधित ज्ञान के विद्वान हैं।

हमारी आपसे प्रार्थना है कि भाई देवजी के बाद उन्हें इस पीठ का संचालक नियुक्त करें। ऐसा करने से डॉ. भानावत को तो प्रोत्साहन मिलेगा ही किंतु उससे भी कहीं महत्वपूर्ण बात यह बनेगी कि भाईश्री सामरजी की परंपराएं रक्षित रहेंगी। केवल उन्हीं के नहीं, लोककला मंडल के दूसरे परिश्रमी और निष्ठावान कार्यकर्ताओं को समय-समय पर पुरस्कृत करने तथा पदोन्नत करने के लिए भी हम आपसे आग्रह करेंगे।

हमारे मन में स्वैच्छिक संस्थाओं के लिए अपार आदर है लेकिन कभी-कभी किसी महान रचनाशील व्यक्ति की मृत्यु की रिक्तता में बौने लोग, जिन्हें मंद यश: प्रार्थी कहते हैं, घुस आते हैं और संकीर्ण अशालीन राजनीति चलती है। लम्बे समय से संस्थाओं की सेवा करने वाले पीछे रह जाते हैं और कहीं-कहीं से चमत्कारी व्यक्ति आ जाते हैं। संस्था इस तरह आन्तरिक कलह और क्षोभ से टूट जाती है।

इस समय आप जैसे मेधावी व्यक्ति इसके अध्यक्ष हैं इसलिए हमें आशा है कि स्वार्थकामी लोग अपने हाथ-पैर नहीं फैलायेंगे और ईमानदार, सच्चे और विद्वान आदर पायेंगे। यदि ऐसा नहीं होता है तो हमें बहुत दुख होगा। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आपके पास समय हो तो बातचीत करने का अवसर दें। लोककला मंडल से हम उसकी रचनाशीलता के कारण जुड़े हैं। अन्यथा न लें।

आपके

(1) जनार्दनराय नागर (2) भवानीशंकर उपाध्याय (3) नंद चतुर्वेदी (4) प्रकाश आतुर (5) ब्रिजमोहन गोयल

संपर्क :
नंद चतुर्वेदी
30, अहिंसापुरी, उदयपुर

इस पत्र बाबत सिंघवीजी ने कोई जिक्र नहीं किया। मैंने अपनी ओर से उन्हें कुछ नहीं लिखा और जब वे कलामंडल आये तब भी कोई बात नहीं छेड़ी। मैंने अपने को कलामंडल संबंधी प्रकरण से दूर ही रखा। दिसम्बर 25, 1981 को उन्होंने मुझे इस पत्र के बारे में लिखा। यह पत्र इस प्रकार है-

कमलालय
बी-8, साउथ एक्सटेंशन, भाग-2
नई दिल्ली-110049

प्रियवर डॉ. भानावत,

आपसे उस दिन विशेष बात नहीं हो पाई। इस बीच श्री नंद चतुर्वेदीजी एवं अन्य हस्ताक्षरों सहित एक पत्र मिला। वह पत्र पहले मिला होता तो उदयपुर में मैं अधिक स्पष्ट बात कर पाता। लगता है, कहीं गलतफहमियों के अंकुर हैं। सदासयता के साथ उन्हें दूर करना चाहिए। मैं आपसे विस्तार से बात करना चाहूंगा।

लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

कलामंडल में डॉ. सिंघवी जब-जब आये, एक अधिकारी के नाते मेरी उनसे भेंट हुई। मैंने भी उन्हें लिखा तो औपचारिकता का ही निर्वाह किया। दिनांक 27 सितंबर 1985 को उन्होंने मुझे यह पत्र लिखा-

प्रिय डॉ. भानावत,

यह जानकर अच्छा लगा कि मेरा उदयपुर आना कलामंडल के हित में लाभप्रद रहा। मेरे मन में फिर भी यह कष्ट है कि पूरी तरह कुछ मैत्रीपूर्ण समाधान नहीं मिल पाया। आप मुझे सब गतिविधियों की जानकारी देते रहें। जैसे भी हो, कलामंडल की कार्यप्रणाली, उसके कार्यक्रमों की गुणात्मकता और संस्था की छवि अच्छी हो।

सप्रेम,
लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

इस बीच मैंने अपने निज की एक पुस्तक तैयार की तब विचार आया कि क्यों न इसकी भूमिका डॉ. सिंघवीजी से ही लिखवा ली जाए। जब मैंने इसका जिक्र किया तो उन्होंने सहर्ष इसके लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की और कुछ ही दिनों में भूमिका लिख भेज दी। इस भूमिका से मुझे लगा कि उन्होंने पूरी पांडुलिपि को गहराई से पढ़ा है और उसी मनोयोग से उसका विवेचन-विश्लेषण किया है।

यह पुस्तक थी- 'अजूबा राजस्थान'। बाद में इस पर मुझे उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा पं. रामनरेश त्रिपाठी नामित पुरस्कार प्रदान किया गया। भूमिका में डॉ. सिंघवी ने लिखा-

डॉ. महेन्द्र भानावत को राजस्थान की लोकपरंपराओं के अध्येता और व्याख्याता के रूप में उल्लेखनीय प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। यह पुस्तक उनकी उपलब्धियों की यात्रा में एक और अध्याय जोड़ती है। डॉ. भानावत ने हमारे देश के गौरव, लोककलाओं के अद्वितीय मर्मज्ञ, स्वर्गीय देवीलाल सामर के पदचिन्हों पर चलकर जनमानस की मान्यताओं और जीवंत अभिव्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में लीक से हट 'लोक' की साधना का प्रयास किया है।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन
उदयपुर, रविवार 01 सितम्बर 2019

सम्पादकीय

किसिम-किसम के लोकमाध्यम

आज की तरह पहले अच्छे-बुरे विविध प्रसंगों पर एक-दूसरे को आमंत्रण देने के अलग-अलग किन्तु बड़े ही मान-मनुहार भरे स्नेहसिक्त माध्यम थे। अब बदलते समय के साथ वे माध्यम नहीं रहे तो वे स्नेह, सौहार्द और आत्मीय सरोकार भी नहीं रहे। तब वाचिक परम्परा थी। सब मौखिक होता था। हर चीज का लेखन भी नहीं होता। अब वाचिक कम सब लिखित और अब तो माबाईल हाजिर। सब कुछ उसी पर। दिनभर उसी में खोये चिपके रहो। प्यार-लाड़ के सन्दर्भ भी उसने छीन लिये हैं।

सार्वजनिक सूचना देने के लिए सैणा होता था जो रेड़ अथवा हेला देता। लोग बड़े ध्यान से सैणा की सेड़ पाड़नी सुनते। आकस्मिक घटना की सूचना को हाका देना या हाका पाड़ना कहते।

किसी पर कोई हमला हो गया। वह सूचना वार देना कहलाती। लूटेरे या धाड़ेती लूटने या धाड़ा पाड़ने आते तो उसकी सूचना होती। सूचना का अर्थ तत्काल पहुंचना होता। तनिक भी

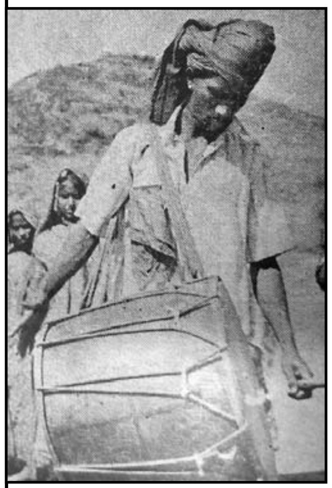

देरी नहीं होती। इससे उस परिवार की रक्षा-सुरक्षा तो होती, तत्काल उसे संरक्षण और सम्बल भी मिलता। इसलिए समूह की भागीदारी से सभी निश्चिंत रहते। लगता था कि कोई व्यक्ति अकेला नहीं है। पूरा समाज है और वह समष्टि का हिस्सा है।

राज की ओर से एक-दूसरे को दूर-पास सन्देश पहुंचाने का काम हरकारा करता। इसकी अलग से पहचान होती। इसके हाथ में लाठी रहती जिसके घूघरियां लगी छमछमाक बजती। इसे कोई भी रास्ते में न रोकता, न टोकता और न नुकसान ही पहुंचाता।

ख्याल पुस्तकों में एक राज्य से दूसरे राज्य में सन्देश पहुंचाने वाला हरकारा प्रारम्भ में ही आकर अपना परिचय देता हुआ अपने राज्य और वहां के राज ठाकुर का उल्लेख करता।

राजा केसरसिंह का ख्याल में हरकारा नेपाल कोट के राजा केसरसिंह का सन्देश देने पहुंच कहता है- 'आया हरकारा राजा केसरसिंघ का नेपाल कोट स्यूं।' इस मुख्य गायकी पर वादकों के साथ हरकारा नाच करता हुआ प्रस्तुत होने वाला खेल, ख्याल की सूचना देकर दर्शकों में रंग जमा देता है।

जनजातियों में अलग-अलग टेकरियों पर रहने वालों की छितरी-छितरी बस्ती होती है। वहां दूर-दूर रह रहे लोगों को ढोल की थाप पर सूचना दी जाती है। ढोल पर जिस ढंग की थाप लगती है, उससे सुनने वाले उसका आशय समझ लेते हैं और उसी तरह की तैयारी से समूह रूप में जा धमकते हैं।

विवाह-शादियों में बरात आने की सूचना, उसे डेरा देने की सूचना, लड़की को विदा करने की सूचना, गीत गाने का बुलावा करने की सूचना, शादी के बाद लड़की के पीहर आने पर मिठाई के लेणे देने की सूचना, घराती-बराती के मिलन सामेले की सूचना, समूह भोज में परिवार के केवल पुरुष को, पूरे परिवार को अथवा उसके साथ उससे मिलने आये सगे समधी, पाई पामणे सहित आमंत्रण अथवा नूता देने का काम सवर्णों में सेवग का होता।

एक गांव बलाई होता जो गांव के बाहर समूह दावत करने की सूचना देता। बरसात नहीं होने पर गांव के बाहर दाल-बाटी-चूरमे का जीमण कर इन्द्रदेव को राजी करने के लिए जो भोज किया जाता वह उजेणी कहलाता। इसी उजेणी से उज्जैन जैसा शहर अस्तित्व में आया कहा जाता है। मौत मरण मृत्यु जैसे प्रसंगों पर बुलावे का प्रसंग तेड़ा देना कहा जाता।

समाज, सत्ता और साहित्य कर्म

-डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर-

साहित्य समाज का दर्पण है। फिर समाज उससे निरन्तर दूर क्यों होता जा रहा है, यह विचारणीय विषय है। क्या हमारा साहित्य अब समाज का दर्पण नहीं रह गया? क्या इसीलिए दैनिक पत्रों ने साहित्य के प्रति उदासीनता दिखलाई है? हिन्दी क्षेत्र की अकादमियां मासिक पत्रिका को सस्ते मूल्य में सामने ला रही हैं। फिर भी स्टाल से नहीं उठाई जा रही हैं। क्यों? किससे पूछें? क्या अपने आप से नहीं पूछा जाय? माना कि पत्रिका के स्थान पर दृश्य-श्रव्य आदि साधन अधिक प्रभावी नजर आने लगे हैं।

ले-देकर एक ही माध्यम वे अनुभव कर रहे हैं, चाहे वे उनकी नापसंद बनने लगे हों। मोबाइल भी उनको यही सुविधा प्रदान कर रहा है। साहित्य और साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएं भी इस ओर बढ़ चली हैं। चाहे जैसे प्रयत्न कर लिये जाएं परन्तु शब्द का स्थान कोई नहीं ले सकता। यह जानते हुए भी साहित्य का रचनाकार उसके प्रति उतना समर्पित नहीं नजर आता जितना उसके प्रभामण्डल के लिए जरूरी है।

साहित्यिक लेखक स्वयं कहता है कि उसे लूटा जा रहा है। प्रकाशक कहता, साहित्यकार जब थैली खोल कर अपने लिखे साहित्य को प्रकाशित करवाने को तत्पर है और वह भी प्रकाशक की शर्तों पर तो फिर प्रकाशक उसके लिये कहां दोषी हुआ? हिन्दी से अपनी पहचान बनाने वाले दक्षिण के साहित्यकार को ऐसे प्रकाशकों ने खूब लूटा है। पाण्डुलिपि भी गई, रूपया, पैसा भी और वे ठगे से हाथ मलते रह गए।

सत्ता पर जिस पार्टी की हुकूमत है, उससे जुड़े प्रकाशकों की चांदी है। इस भ्रम को फैलाकर प्रकाशक अपनी झेंप मिटा रहे हैं। प्रकाशक लेखक नहीं, व्यवसायी है। व्यवसाय का धर्म-कर्म, विधि-विधान अलग है। वैसे लेखक भी इस तरफ बढ़ रहा है। क्यों न बढ़े, जब इस युग का समग्र युगधर्म ही धन केन्द्रित हो गया हो।

मंत्री, सांसद, विधायक आदि जन प्रतिनिधि अपने क्षेत्र की जनता को धोखा देकर अपने मतदाताओं को अंगूठा दिखा रहे हैं। बिना किसी मापदण्ड के, विचारधारा के पार्टी बदलने की अधिनायकी पद्धति-प्रवृत्ति का सरेआम प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्हें अपने वेतन, पेंशन, जेब खर्च, मुफ्त सुविधाओं में इजाफा करने से ही फुरसत नहीं है। उनसे जन कल्याण की आस लगाना ओस से प्यास बुझाने जैसा प्रयत्न है। सांसद विधानसभा से लेकर पंचायत तक क्या इसी ध्येय को साधने में लगे हुए हैं।

70 वर्ष का बूढ़ा लोकतंत्र देश को किन तंत्रों का चमत्कार दिखाता जा रहा है। साहित्यकार उस नंगे सच की कठोरता, बहुरूपियापन, चक्रव्यूह आदि को साहित्य और समाज के सामने लाकर क्यों नहीं दिखा पा रहा है? कौन रोक रहा है उसे? शब्द तब सार्थक अनुभव होता है, जब वह साधना से हटे।

थोथा शब्द, शब्द नहीं होता। शब्द का मुखौटा होता है। मात्र साहित्यकार से समाज अपेक्षा कर सकता है कि वह सामाजिक चेतना को सक्रिय कर प्रबल करे। यह उसका दायित्व भी है। कर्म क्षेत्र भी है कि बिना सुदर्शन उठाये कुरुक्षेत्र में अपनी भूमिका की सार्थकता सिद्ध कर सके।

पत्र-पत्रिकाएं शब्द की सार्थकता सिद्ध करने का अभियान हैं। वे ही शब्द को यांत्रिक अनुभूतियों से जोड़ लोक को सर्वलोकी बनाती हैं। साहित्यकार, सम्पादक, पत्रकार का समन्वय स्वावलंबन की दिशा में अपनी चेतन अन्तर्दृष्टि का संकल्प-सेतु बने।

घोड़े की लगाम समाज के हाथ में हो तो उसे नियंत्रण में रखने के लिए निष्पक्ष तटस्थ साहित्यकार, सम्पादक, पत्रकार की सर्वाधिक जिम्मेदारी है। घोड़ा तभी मचलता है, दिशाएं बदलता है जब लगाम ढीली पड़ने लगती है। एक दफे लगाम हाथ से छूटी नहीं कि सबकुछ गड़बड़ाने लगता है।

सत्ता पक्ष ताल ठोककर जिस बुलन्दी पर पहुंचाने की बात कर पा रहा है, उसके कारण सब बातों के सौदागर हैं जिनकी कथनी और करनी में अन्तर है। ऐसी मानसिकता से जीता समाज आत्मघाती होने की लाचारी दिखा निहत्था खड़ा मिलता है। वे शक्तियां जो समाज को लालच के मोहपाश में फांसती आगे बढ़ती हैं वे समय आने पर तानाशाही होने में देर नहीं लगातीं। समाज ऐसे दंशों की पीड़ा से झुलसता-हारता रहा है।

मिथ्याचार जब सत्य और आचरण का स्थान लेने लगता है, तब मूल्य, चरित्र तथा विश्वास क्षतिग्रस्त होने लगता है। सामाजिक शक्तियों का क्षरण आम हो जाता है। सम्बन्धों की पकड़ कमजोर और छल-प्रपंच के चक्रव्यूह में फंस टीसने लगती है। परस्पर विश्वास की नींव हिलने लगती है।

साहित्य की परिपक्वता और जीवनोन्मुखता ऐसा नहीं होने देती। सवाल तंत्र की जड़ता का नहीं, उसकी संवेदना, सहानुभूति, सहिष्णुता और सदाचार के साझे सोच का है। उसके लिए इन सभी स्तम्भों का समन्वय अपरिहार्य है।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' बराबर मिल रहा है। इस अंक में उदयपुर की यादें बार-बार जोर मारती हैं। 15 जून के स्मृतियों के शिखर स्तंभ में 'यादों की उपलब्धियों में गोरधन बाबा' पढ़कर तो विद्या भवन के कला कक्ष की यादों में गोरधन बाबा का सजीव चित्र जाग उठा। मैं भी 1954-55 में विद्या भवन के गोविन्दराम सेक्सरिया टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में बीएड का छात्र था।

उस एक वर्ष के दौरान उदयपुर में बिताया एक-एक क्षण जीवन्त हो उठा। नंद चतुर्वेदी हमारे गुरु रहे। उनके सान्निध्य में अनेक साहित्यकारों से परिचय हुआ। पूरे साल भर समय-समय पर आयोजित गोष्ठियों में शिरकत करने लगा। प्रकाश आतुर का तो मेरे पर अकूत स्नेह था। उन्होंने कई बार अपने स्कूल के आयोजनों में मुझे बुलाया था।

श्री कालूलाल श्रीमाली हमारे प्रिंसिपल थे और इसी साल वे देश के शिक्षामंत्री बनाये गये। इसी कड़ी में उनकी जगह के. एन. श्रीवास्तव प्रिंसिपल बने। एल. के. ओड़, बी. डी. श्रीवास्तव, मेडम अरोड़ा आदि प्रोफेसर्स की भी याद बनी हुई है। फतहसागर की लहरें, सहेलियों की बाड़ी की मादक सुगंध दिल को सकून देने वाली थी। प्रकृति की गोद में वर्ष में चार गोष्ठियों, पिकनिकों ने जीवन को जीवन्त बना दिया।

आपका पत्र स्टेंडर्ड का निकल रहा है। सम्पादकीय आलेख मध्य मार्ग वाले हैं जो किसी को रड़कते नहीं। वैसे शोधपूर्ण सामग्री और आपकी स्मृतियों का लेखा जोखा भी मिलता रहता है।

आप बिणजारो के भी प्रबल हितैषी रहे हैं। मैं समझता हूं कि पत्र निकालना सरल कार्य नहीं है। यह उनबखायों से भरा मार्ग है। मैं तो 50 सालों से निकाल रहा हूं। मैं तो वर्ष में एकबार सजग होकर आर्थिक कष्टों को भोग रहा हूं।

आपको तो 15 दिन में प्रकाशन की प्रसव वेदना भोगनी पड़ती है। लखदाय है तुक्तक भानावत को जो यह प्रकाशन पीड़ा भोग रहे हैं पर खुशी इस बात की है कि यह पत्र सकारात्मक सोच लिये निरन्तर बढ़ रहा है जिसका संतोष है। मेरी बधाई स्वीकारें।

- डॉ. नागराज शर्मा, पिलानी

'शब्द रंजन' समाचार पत्र वर्ष चार अंक-11 में प्रकाशित आदिम और अधुनातन संस्कृति, इतिहास और स्मृतियों के साथ नव विचार और संवाद की बोधपरक अनूठी प्रस्तुती हुई है।

विषय संबंधी पाठकों, शोधार्थियों एवं विशेषज्ञों के लिए प्रस्तुत सामग्री पठनीय एवं संग्रहणीय है। मौलिक सम्पादकीय और ज्ञान रंजन के लिए समस्त शब्द रंजन परिवार का साधुवाद। **- डॉ. ए. एल. दमामी, उदयपुर**

फोटो : राहुल सोनी

उदयपुर के होटल फतहगढ़ पेलेस में 24 अगस्त को आयोजित जेके पेपर के प्रेसीडेंट ए. एस. मेहता के 60वें जन्म दिवस पर उपस्थित पारिवारिक जन।

दिन भर चले इस समारोह में डॉ. संजीव भानावत, मंजु मेहता, अशोक मेहता, डॉ. सतीश मेहता, कमल नागोरी, श्याम सिसोदिया आदि ने श्री ए. एस. मेहता की असाधारण उपलब्धियों को रेखांकित कर प्रेरणा लेने पर जोर दिया। मेहताजी ने भावभीने आत्मीक स्वरों में आभार व्यक्त किया।

इस मौके पर रंजना भानावत द्वारा सम्पादित पाक्षिक शब्द रंजन का ताजा अंक लोकार्पित कर वितरित किया गया जिसमें डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा स्मृतियों के शिखर स्तंभ में प्रकाशित लेख 'कर्त्तव्यनिष्ठ कौशल से कीर्तिवान बने ए. एस. मेहता' चर्चा का केन्द्र रहा। श्रीमती तृप्ति मेहता ने आयोजन को अविस्मरणीय उपलब्धि बताया।

विवरण : भव्य मेहता

खोज-खबर

किस्सेबाज भोलेनाथ

उदयपुर की सोलंकियों की घाटी पर किस्सेबाज भोलेनाथ के अनेक खटके देखने को मिले। 89 बरस की उम्र लिए भोलेनाथ से मेरी भेंट 23 अक्टूबर 1989 को हुई। अफसोस रहा कि इस भेंट के बाद ही 03 नवम्बर को उनका निधन हो गया।

भोलेनाथ हंसी मजाक तथा मसखरी की लचक लिये जो किस्से सुनाते उन्हें सुन पेट की गुलगुली पर काबू पाना मुश्किल हो जाता। किस्से पर किस्से सुनते जाइये। उनका खजाना और अधिक सिमसिम खुलता जायेगा। उनका यह सौभाग्य रहा कि वे तीन-तीन महाराणा के ठिकानों के सरदारों तथा उमरावों की हजामती सेवा में रहे।

उन्हें अनेक कलाकारों, विद्वानों, राजनेताओं तथा बड़ेरों की मेहमानदारी का लाभ मिला। भोलेनाथ के संगेती लाला गिरधारी उनसे भी सवाये दांत कटी रोटी थे। उनमें डेढ़ अक्ल की चतुराई और मजाक करने की अद्‌भुत क्षमता थी। एकबार लाला गिरधारी ने भोलेनाथ को तीन रागें बताईं। उन रागों के बोल तो बता दिये किन्तु अन्तरे छिपाकर गाने को कहा। भोलेनाथ बेताला हो जाते तो लालाजी उनकी पीठ थपथपाते।

एकबार भटींडा का कत्थक शंकरलाल महंतजी की धर्मशाला में ठहरा। भोलेनाथ हजामत की पेटी ले वहां पहुंच गये। राजदरबार में कत्थक को दरबार की ओर से पांच सौ रूपया बख्शीश मिला। शंकरलाल ने कहा कि गुणीजनखाना के हाकिम ने तो उन्हें कोई तवज्जु नहीं दी पर भोलेनाथ की वजह से उन्हें अपनी कला प्रस्तुत करने का मौका सुलभ हुआ। शंकरलाल भोलेनाथ को वह भेंट देना चाहता था पर उन्होंने नहीं ली और अपने घर आमंत्रित कर मक्की की रोटी और उड़द की दाल का भोजन कराया। इस अवसर पर शंकरलाल ने अंगुलियों पर उन्हें सौलह मात्रा गिन कर बताई और कहा कि नौ से प्रारम्भ करो तब सौलह पर सम आता है।

भोलेनाथ ने इन्दौर के रहमतखां से तबला सीखा। हैदरबख्श चिरंजी, नाथू उस्ताद और हाफिजखां से भी उन्होंने तबला बजाना सीखा। अपनी सित्तर बरस पुरानी तबला जोड़ी बताकर उन्होंने मुझे कहा कि वे प्रतिदिन इस पर रियाज करते हैं। एकबार रात को उन्हें स्वप्न आया कि तबले पर हाथ की ऊंगली कैसे रखी जाय। सुबह उठ उन्होंने उसी के अनुसार तबला बजाना शुरू किया तो हवा की तरह तबला बजाई शुरू हो गई। उन्होंने महाराणा भगवतसिंहजी की पच्चीस बरस तक चाकरी की। एकबार किसी बात को लेकर उनसे नाराजगी हो गई तब तीन बार माफी मांग उनसे राजीपना किया।

भोलेनाथ दिलदार थे। मसखरी मोहब्बत के जीव थे। एकबार पं. उमाशंकर द्विवेदी की खोपड़ी सफाचट कर उनकी चोटी उड़ा उस जगह दूसरी चोटी चिपका दी। जब पंडितजी नहाने बैठे तो हर-हर गंगे करते वक्त चोटी उनके हाथ में आ गई। वे भोलेनाथ की कला समझ गए। अपनी नाराजगी प्रकट करते यह बात उन्होंने गोपाल गंधर्व को बताई।

इस पर गोपालजी ने यह बात भोलेनाथ को जा परोसी तब पंडितजी ने भोलेनाथ से बोलना बन्द कर दिया। एक दिन अस्थल मन्दिर के बाहर भोलेनाथ से पंडितजी का आमना-सामना हो गया। उस वक्त गोपालजी उनके साथ थे। उमाशंकरजी ने भोलेनाथ को देखते ही गालियों की बौछार शुरू कर दी। भोलेनाथ उनसे भी सवाया निकले। नेहले पर देहला देते बोले, बेटी का बाप रोता क्यूं है? चोटी की करामात तो इन गोपालजी की थी।

गोपालजी की ऐसी स्थिति हो गई कि काटो तो खून नहीं। भोलेनाथ मोतीलाल मेनारिया, जनार्दनराय नागर, नाथूसिंह मिहियारिया, भवानीशंकर ज्योतिषी की मण्डली की भी कभीकभाक शोभा बनते जो प्रतिदिन ही संध्या को हितैषी पुस्तक भण्डार के बाहर बैठक मांडकर गपशप किया करते। गोपाल गंधर्व की तरह ही उनके पुत्र चन्द्र गंधर्व ने भी बड़ा नाम कमाया।

– म. भा

एचडीएफसी बैंक एवं मास्टरकार्ड द्वारा मिलेनिया कार्ड लॉन्च

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक लि. एवं मास्टरकार्ड ने मिलेनिया लॉन्च किया। यह भारत में कार्ड्स की पहली श्रृंखला है, जो खास लाईफस्टाईल एवं मिलेनियल्स की अपेक्षाओं के अनुरूप तैयार की गई है। ये कार्ड अनेक फायदों एवं रिवार्ड्स के साथ आते हैं, जो खासकर डिजिटल पीढ़ी के लिए तैयार किए गए हैं।

पराग राव, कंट्री हेड, कार्ड पेमेंट प्रोडक्ट्स, मर्चेंट एक्वायरिंग सर्विसेस एवं मार्केटिंग, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि मिलेनियल्स हमारे देश का भविष्य हैं और वो हमारे लिए बड़े अवसरों का निर्माण करते हैं। मुझे विश्वास है कि कार्ड्स की यह अद्वितीय श्रृंखला न केवल उनकी विशिष्ट जीवनशैली में योगदान देगी, बल्कि हमें उनकी विकसित होती जरूरतों को पूरा करने में समर्थ भी बनाएगी। मिलेनिया श्रृंखला के कार्ड के द्वारा यह पीढ़ी आज ज्यादा काम कर पाएगी और उसे अपने जीवन के अन्य पक्षों से समझौता भी नहीं करना पड़ेगा।

पौरुष सिंह, डिवीज़न प्रेसिडेंट, साउथ एशिया, मास्टरकार्ड ने कहा कि भारत एक युवा देश है और मिलेनियल्स की उम्मीदें लगातार विकसित हो रही हैं। मोबाईल फर्स्ट डिजिटल नेटिव्स की यह पीढ़ी कम कैश वाली अर्थव्यवस्था का विस्तार करने के अपार अवसर प्रदान करती है। मास्टरकार्ड सुगम यूज़र अनुभव के साथ सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा मापदंड प्रदान करता है और एक लाईफस्टाईल एवं अनुभव पर केंद्रित ब्रांड के रूप में विकसित हो रहा है, जिसे मिलेनियल्स महत्व देते हैं। मास्टरकार्ड को इस सेगमेंट पर केंद्रित कार्ड्स की एक्सक्लुसिव श्रृंखला के लॉन्च के लिए एचडीएफसी बैंक के साथ साझेदारी करने की खुशी है।

जावर माइन्स ने जीता प्री- सुब्रतो कप नेशनल्स

उदयपुर। डीएवी एचजेडएल स्कूल (जावर माइन्स) का प्रतिनिधित्व करते हुए जिंक फुटबाल अकादमी की युवा टीम ने हरियाणा के भुना में आयोजित अंडर-17 प्री-सुब्रतो कप नेशनल्स फॉर सीबीएसई स्कूल्स जीतकर इतिहास रच दिया। डीएवी एचजेडएल सीनियर सेकेंड्री स्कूल, जावर माइन्स के प्रींसिपल हरबंस ठाकुर ने कहा कि 15 सीबीएसआई नेशनल स्कूल्स टीम्स के बीच खेली गई इस प्रतियोगिता में अपने शानदार प्रदर्शन के आधार पर जिंक फुटबाल अकादमी की टीम ने सुब्रतो कप इंटरनेशनल्स में सीबीएसआई का प्रतिनिधित्व करने का हक हासिल किया। सुब्रतो कप का आयोजन नई दिल्ली में सात सितम्बर से होना है।

फाइनल में डीएवी एचजेडएल स्कूल ने विश्वास एनएवी शारदा पब्लिक स्कूल को 2-1 से हराया। हालांकि यह खिताब डीएवी स्कूल के हिस्से आसानी से नहीं आया क्योंकि अपने घरेलू दर्शकों की हौंसला अफजाई का फायदा उठाकर स्थानीय स्कूल ने मैच का पहला गोल किया। स्ट्राइकर गौरव मीणा ने हाफटाइम से पहले स्कोर बराबर कर दिया। दूसरे हाफ में दोनों टीमों के बीच जोरदार प्रतिस्पर्धा हुई। गौरव ने अमन खान के शानदार थ्रू बॉल पास पर एक और गोल करते हुए डीएवी स्कूल को आगे कर दिया। गोलकीपर अनसाई गोयारी इस मैच के हीरो साबित हुए क्योंकि उन्होंने अंतिम क्षणों में कई हमले बेकार किए और मेजबान टीम को बराबरी करने का मौका नहीं दिया।

जिंक फुटबाल अकादमी के मुख्य कोच सुरेश कटारिया ने कहा कि इससे पहले, ग्रुप-बी में रखे गए डीएवी एचजेडएल के 16 साल के कम उम्र के लड़कों ने अपने पहले मैच में उत्तराखंड के अमेनिटी पब्लिक स्कूल को 2-1 से हराया और फिर अपने दूसरे मैच में उत्तराखंड के ही एसएमएस दत्ता मेमोरियल पब्लिक स्कूल को 3-0 से करारी शिकस्त दी। अंतिम ग्रुप मैच में उदयपुर के खिलाड़ियों को गंगानगर के शाह सतनाम पब्लिक स्कूल के खिलाफ 1-1 से ड्रॉ खेलना पड़ा। इस तरह इस टीम ने अपने ग्रुप में टॉप पर रहते हुए सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई किया। अंतिम-4 दौर में डीएवी एचजेडएल स्कूल ने गुरुग्राम के एससीआर स्कूल को एकतरफा अंदाज में हराया।

रक्तदान शिविर में 38 यूनिट रक्त संग्रहण

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान उदयपुर एवं आरएनटी मेडीकल कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को संस्थान के मानव मंदिर परिसर में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें 38 यूनिट रक्त संग्रहण किया गया। शिविर का उद्घाटन संस्थान के चेयरमैन कैलाश मानव, कमलादेवी, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, वंदना अग्रवाल ने दीप प्रज्जवलित एवं फीता काटकर किया। शिविर में संस्थान के कर्मचारियों, भारतभर से आये रोगियों के परिजनों तथा स्थानीय निवासियों ने रक्तदान किया। आरएनटी मेडीकल कॉलेज की ओर से प्रमोद, कैलाश, अनिल, कांति, बनवारी, दिनेश कुमार, सोनु बडौला, नरेन्द्र गायरी, अनिल शर्मा ने सेवाएं दी। संस्थान संस्थापक कैलाश मानव ने रक्तदान का महत्व बताते हुए कहा कि मौजूदा दौर में रक्तदान एक महती आवश्यकता है। रक्तदान सबसे उत्तमदान है इससे कई जिंदगियां मौत की आगोश में जाने से बच जाती हैं।

नारायण सेवा में जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान में शनिवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। संस्थान के हिरण मगरी, सेक्टर-4 स्थित मानव मन्दिर प्रांगण में संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' एवं श्रीमती कमलादेवी अग्रवाल के सान्निध्य में आयोजित भजन संध्या में नृसिंह लोहार, मीना चौहान, सुरेश कुमार ने भजन प्रस्तुत किये। अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि इस अवसर पर प्रांगण में श्रीकृष्ण जन्म एवं उनके विविध लीला प्रसंगों से सम्बन्धित सजी झांकियों के बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने दर्शन किए। निदेशक वंदना अग्रवाल के निर्देशन में दही-हांडी प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें संस्थान के आवासीय विद्यालय के बालकों की टीमों ने भाग लिया। संचालन महिम जैन ने किया। कृष्ण जन्म महाआरती एवं पंजेरी के प्रसाद के वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

पीआईएमएस हॉस्पिटल को मिली एनएबीएच मान्यता

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, (पीआईएमएस), उमरड़ा हॉस्पिटल को रोगियों को उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए नेशनल एक्रिडेशन बोर्ड ऑफ हॉस्पिटल्स (एनएबीएच) से मान्यता मिली है। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि एनएबीएच से मान्यता प्राप्त होने पर हॉस्पिटल ने एक ओर मील का पत्थर साबित किया है। पीआईएमएस में मरीज की देखभाल, बुनियादी ढांचा, ट्रांसिंग की गुणवत्ता, कर्मियों की क्षमता और परिचालन प्रणाली की दक्षता के आधार पर यह मान्यता मिली है।

जिंक द्वारा मेड़ता में आरओ प्लांट का शुभारंभ

उदयपुर। महाराज की खेड़ी और टूस डांगियान पंचायत के बाद अब मेड़ता गांव सहित 15 हजार से अधिक लोगों को अब शुद्ध पेयजल उपलब्ध हो सकेगा। हिन्दुस्तान जिंक द्वारा 40 लाख की लागत से देबारी के निकट मेड़ता गांव में वाटर प्लांट एवं पांच वॉटर एटीएम का शुभारंभ चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी, मावली विधायक धर्मनारायण जोशी, जिंक के डायरेक्टर कॉमर्शियल अमिताभ गुप्ता, वेदांता हेड सीएसआर निलीमा खेतान एवं गणमान्य लोगों ने किया।

जिंक द्वारा पूर्व में सामुदायिक शुद्ध पेयजल परियोजना के तहत् 70 लाख की लागत से देबारी स्मेल्टर के आस पास के क्षेत्र महाराज की खेड़ी और टूस डांगियान पंचायत में दो आरओ वाटर प्लांट एवं चार वाटर एटीएम, एक वाटर मोबाइल एटीएम वैन संचालित किए जा रहे हैं। पेयजल प्लांट की क्षमता एक हजार लीटर प्रति घण्टा है जिन्हें गांव वाले 20 लीटर पानी 6 रूपये में प्राप्त कर सकेंगे। मेड़ता में आरओ वाटर प्लांट के साथ ही ढाणा, गाडवा, नामरी, बिछड़ी एवं शियाड़ा में एटीएम प्लांट लगाए गये है।

इनसे प्रीपेड एटीएम कार्ड के माध्यम से 24 घण्टे जल सेवा उपलब्ध हो सकेगी। पंचायत में पेयजल उपलब्ध कराने के लिए एटीम के अलावा दो हजार लीटर क्षमता की मोबाइल एटीएम वैन की सुविधा दी जा रही है जो कि आस पास के क्षेत्र में पेयजल उपलब्ध करा रही है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/
आदिवासी जीवनधारा	395/
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/
राजस्थान के लोकनृत्य	200/
गुजरात के लोकनृत्य	200/
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/
भारतीय लोकमाध्यम	75/
अजूबा भारत	200/
पाबूजी की पड़	50/
लोककलाओं का आजादीकरण	250/
उदयपुर के आदिवासी	250/
निर्भय मीरां	250/
रंग रूड़ो राजस्थान	100/
कुंवारे देश के आदिवासी	100/
जन्हें मैं जानता हूं	100/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वाषिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

एचडीएफसी बैंक लाया 1100 गांवों की जिंदगी में बदलाव

उदयपुर। झारखंड में रामगढ़ जिले के जंगलों के बाहरी हिस्सों में स्थित छोटा सा गांव, कचूड़ग देश का 1100वां गांव बन गया, जहां एचडीएफसी बैंक के फ्लैगशिप अभियान, 'परिवर्तन' के तहत होलिस्टिक रूरल डेवलपमेंट प्रोग्राम (एचआरडीपी) के माध्यम से जिंदगियों में परिवर्तन लाया गया है। सामाजिक अभियानों के लिए अम्ब्रेला ब्रांड, परिवर्तन द्वारा बैंक का उद्देश्य सतत व सामाजिक बदलाव लाना है।

मिस आशिमा भट्ट, ग्रुप हेड - सीएसआर, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि एचआरडीपी द्वारा इस दूरदराज के गांव के 63 परिवार, जो अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं, उन्हें 8,000 रु. से 10,000 रु. प्रतिमाह की अतिरिक्त आय मिली है। एचआरडीपी ने भारत के 16 राज्यों में 14 लाख से अधिक नागरिकों की जिंदगियों को लाभान्वित किया है। यह 5 प्रमुख क्षेत्रों में केंद्रित रहते हुए गांवों के जीवन में सुधार करता है। इस अद्वितीय कार्यक्रम के तहत गांव का पूर्ण विश्लेषण किया जाता है और यहां विकास की जरूरतों को समझा जाता है। इन जरूरतों को सतत व प्रभावशाली तरीके से पूरा करने के लिए बैंक एक एनजीओ एवं स्थानीय समुदाय के साथ साझेदारी में दीर्घकालिक समाधान का विकास करता है। एचआरडीपी के हितग्राहियों में छोटे किसान, युवा, भूमिहीन मजदूर, बच्चे और महिलाएं हैं।

टेक्नो की नई स्पार्क सीरीज़ लॉन्च

उदयपुर। पिछले महीने ब्रांड के फ्लैगशिप फैंटम 9 की प्रभावशाली लॉन्च के बाद, प्रीमियम स्मार्टफोन निर्माता 'टेक्नो' अब एक और ग्लोबल प्रोडक्ट लाइन 'स्पार्क' के लॉन्च के साथ त्योहारों के इस मौसम में अपने प्रशंसकों के उत्साह को और बढ़ाने के लिए पूरी तरह तैयार है, साथ ही इससे भारत में उनका पोर्टफोलियो और मजबूत हो रहा है।

ट्रांशन इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरिजीत तालपात्रा ने कहा कि दुनिया में अपने सबसे ज़्यादा बिकने वाले 'स्पार्क' सीरीज़ के दो बिल्कुल नए एंट्री-लेवल स्मार्टफोन-यानी कि 'टेक्नो स्पार्क गो' और 'टेक्नो स्पार्क 4 एयर' को क्रमशः रूपये 5499 और रूपये 6999 की क़ीमत पर भारत में लॉन्च किया गया है। इस स्मार्टफोन की नई जोड़ी की बिक्री शुरू हो गई है, और यह देशभर के 35,000 से ज़्यादा ऑफलाइन रिटेल स्टोर पर उपलब्ध होगा। ग्राहकों को मानार्थ उपहार के रूप में टेक्नो स्पार्क गो की ख़रीद पर 799 रूपये का ब्लूटूथ इयरपीस दिया जाएगा।

रसवंती कलाओं के.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

इस साधना में उन्होंने न केवल अथक अध्यवसाय का परिचय दिया है बल्कि परंपरा और मान्यता की जड़ तक पहुंचने की क्षमता अर्जित की है।

'अजूबा राजस्थान' वास्तव में राजस्थानी जनजीवन के कुछ अंचलों का एक अनोखा वृतांत है जो यह सिद्ध करता है कि कभी-कभी वास्तविकता के तथ्य किसी भी कपोल कल्पना से अधिक आश्चर्यजनक हो सकते हैं। डॉ. भानावत ने कई विचित्र रीतियों, परंपराओं और प्रचलनों को एक सचित्र संकलन में सजाकर व्यापक दृष्टि दी है और 'लोक' के जीवंत यथार्थ को समानुभूति तथा सहानुभूति दी है।

उदयपुर क्षेत्र में डॉ. भानावत की नवरात्रा यात्रा में संकलित तथ्य अजूबा की माला के मनकों की तरह अलग-अलग होते हुए भी मूलभूत रूप से एक धागे में पिरोये हुए हैं। यात्रा के हर कदम पर कथाओं का अबाध क्रम है और जनकथाओं के विचित्र कथ्य समाए हुए विश्वासों के बिम्ब, कथावाचक की बात में रस है और शैली में सुगम सुघड़ साहित्यिकता की बानगी और रवानगी।

इस यात्रा-वृत्तांत की यह विशेषता है कि इसके प्रत्येक पृष्ठ में लोकजीवन की धरती की सौंधी सुगंध सन्निहित है। इसमें लोकभाषा के मुहावरों की प्रतिध्वनि अनुगूंजित होती है और पाठक बरबस इन अजूबों की दुनिया में प्रविष्ट हुए बिना नहीं रह सकता। इस यात्रा का वृत्तांत पढ़ते-बतियाते थोड़ी सी देर में पाठक अनायास ही साक्षी और सहयात्री की अनुभूति का आस्वादन करने लगता है। जब-तब लोकदेवता कल्लाजी की रहस्यमयी संकेतात्मक उपस्थिति पाठक को सचेतन मूर्च्छा का आयाम देते हुए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष के बीच एवं समय के पार ले जाती प्रतीत होती है।

'अजूबा राजस्थान' मात्र एक रोचक यात्रा-वृत्तांत ही नहीं है। इसे किस्सागोई कहना असंगत होगा। इस पुस्तक में अनुसंधान, साहित्य रिपोर्ताज, समाजशास्त्र एवं सामाजिक नेतृत्व का सम्मिश्रित समावेश हुआ है जिसे एक नई विधा की सौष्ठवपूर्ण प्रस्तुति के लिए लेखक को पाठकों की ओर से और मेरी अपनी ओर से हार्दिक बधाई एवं इस विधा की संभावनाओं का स्वागत।

-लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

इससे स्पष्ट है कि डॉ. सिंघवीजी का, मेरा लेखकीय रिश्ता था। कलामंडलीय रिश्ते को हमने इससे दूर ही रखा। इसका निर्वाह दोनों ओर से बराबर होता रहा किंतु जब कलामंडल का प्रकरण स्वभावत: उनसे जुड़ गया तब हम उससे भी विरक्त नहीं हो सकते थे। मैंने कलामंडल के बारे में कुछ भी नहीं बताया किंतु बहुत सारी बातें हवा कह देती है। उसे हर व्यक्ति नहीं सुन सकता किंतु जिन्हें सुनना समझना सुगंध लेना होता है वे सब कुछ समझ सुन गंध ले ही लेते हैं। इसका संकेत मुझे उनके द्वारा लिखे 14 सितंबर 1988 के पत्र से मिला। उन्होंने लिखा-

प्रियवर डॉ. भानावत,

मेरे लिए यह अवसाद का कारण है कि इस देश में अधिकांश स्वयंसेवी संस्थाओं में सौहार्द और सौमनस्य का अकाल है और अभियोग और असंतोष की विभीषिका बढ़ती चली जा रही है। मैंने तो इस वर्ष अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देने का निश्चय कर लिया था किंतु वहां जाकर लगा कि यह कोई समाधान नहीं है। दायित्व सबका होता है-अच्छे में भी और बुरे में भी।

क्यों ऐसा होता है कि हम भारतवासी साथ मिलजुलकर काम नहीं कर पाते? संस्था में निष्ठा, अनुशासन और पारस्परिकता के बिना कोई सुनहला भविष्य नहीं हो सकता।

फिर भी क्यों नहीं, सब मिलकर प्रतिबद्ध और सन्नद्ध होते कि संस्था का मार्ग प्रशस्त हो? क्यों नहीं कोई राह निकलने की चेष्टा की जाती है? आपेक्षों की बौछार देखता हूं, सद्भावना की फुहार नहीं दिखाई देती। मेरे लिए यह बहुत खेद का विषय है। आपके रचनात्मक सुझावों की मुझे अपेक्षा है। सप्रेम,

आपका सदा शुभैषी
-लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

डॉ. सिंघवी देश की कई संस्थाओं और संगठनों से जुड़े हुए थे। उन सबका उन्हें व्यापक अनुभव तथा निरीक्षण था। कलामंडल के पतित होते प्रकरण से भी वे पूर्णत: परिचित हो चुके थे और उससे आहत भी थे किंतु स्थानीय अशोभनीय तथा अशालीन राजनीति के आगे बेबस थे। मुझे यह भी लग गया था कि यहां जो कुछ हुआ जा रहा है, सदस्यगण उनके साथ ऊपरी सहानुभूति तो व्यक्त कर रहे हैं किंतु उन्हें सही तथ्यों की जानकारी नहीं दे रहे हैं।

मैंने भी सिंघवीजी को उसके बाद कोई पत्र नहीं लिखा। वे स्वयं भी लंदन में भारतीय उच्चायुक्त बन वहीं रहने लग गये थे लेकिन उनके मन में बराबर यह बात तो टौंच करती रही कि सामरजी के निधन के बाद पूरे विश्व में अपना नाम रोशन करने वाली कला संस्कृति की परंपराओं को संरक्षित संवर्द्धित करने वाली संस्था उनके देखते-देखते, उनके अध्यक्ष पद पर रहते धूमिल हुई जा रही है और उसे संबल देने का उनके पास ठोस उपाय होते हुए भी वे निरीह बने हुए हैं।

इस दुख को व्यक्त करता हुआ उन्होंने अपने व्यथित भावों में मुझे लंदन से 'इंडिया हाउस' से पत्र लिखा। अंग्रेजी में लिखे इस पत्र में उन्होंने संस्कृति के राजनीतिकरण होने पर सख्त अफसोस प्रकट किया। इस पत्र में डॉ. सिंघवी के सहृदय की पारदर्शिता, सोच की शुभ्रता तथा कला-संस्कृति के प्रति प्रगाढ़ आस्था के साथ-साथ उससे जुड़ी संवेदन-सहानुभूति का इजहार मिलता है। कलामंडल जैसी संस्था के अन्तरावलोकन से फलित यह पत्र डॉ. सिंघवी के विधिवेत्ता होने का असल दस्तावेज भी है। उन्होंने तो इस संस्था को अवलोका और मात्र निहारा है जबकि मैंने तो इसमें पैंतीस वर्ष गुजारकर इसके प्रत्येक क्षण को अपनी आत्मचेतना से ज्योतिर्मय किया है। यह पत्र है-

India House,
Aldwych, London, wc.2
18 January, 1993

Dear Dr. Bhanawat,

I find it difficult to reconcile the sharp differences and antagonistic attitudes within Bhartiya Lok-Kala Mandal and feel deeply distressed. All the more so because I am far away, there is a pointless profusion and prolifaration of combative and contentious litigation and I have no wish to be dragged into meaningless meandering controversies.

All I want is to save the precious legacy of that cultural savant, Devilalji Samar, whose memory and friendship I deeply cherish. Little did I know when he asked me to be president of Bhartiya Lok-Kala Mandal that politics of culture would be worse than the decadence of the culture of politics. In view of the ferocious clashes of view-points and the many events which have taken place, I do not know if I have any role of play except to appeal to all concerned to abjure the divisive ways and to adopt the path of selfless cooperation.

Yours sincerely,
L. M. Singhvi

डॉ. सिंघवी दूरद्रष्टा थे। उन्हें क्या करणीय है और क्या अकरणीय ; इसे वे समय का ठीक से आकलन कर अपने विवेकशील सोच और प्रज्ञा-बुद्धि का उपयोग करते थे। ऐसी जगह वे नितांत मौन तथा चुप ही बने रहने में सार समझते थे जहां उनकी कहनी बेअसर रहती और सुधार की कोई गुंजाइश नहीं रहती।

कलामंडल का पूरा घटनाक्रम इसका साक्षी है। मुझे इस बात का आश्चर्य ही रहेगा कि क्यों और कैसे एक विश्व कीर्तिमान प्राप्त संस्था बिना किसी प्राकृतिक प्रकोप के ध्वस्त हो जाती है? इस संस्था के श्रीवर्धन के लिए कितनों के स्वप्न जुड़े हुए थे। डॉ. सिंघवी भी इसीलिए जुड़े थे कि वे अपने योगदान से इसे पूरे विश्व में लोककला-संस्कृति की एक मानक संस्था के रूप में निराली पहचान दिला सकें।

3 दिसंबर 1981 को सामरजी का निधन हुआ और 4 दिसंबर को उनका दाह-संस्कार किया गया। उसके बारह दिन बाद ही नंद चतुर्वेदी ने कुछ मित्रों के सहयोग से डॉ. सिंघवी को चिट्ठी लिखी थी जिसका उल्लेख पूर्व में, इस लेख में किया गया है। नंद बाबू कोई ज्योतिषी या भविष्यवक्ता नहीं थे किंतु उदयपुर में वर्षों से निवास करने के कारण अपनी प्रबुद्ध विद्या-बुद्धि और अनुभव-कौशल से यहां के उन लोगों के मिजाज तथा अनीति-चातुर्य से परिचित थे इसीलिए भावी-आशंका का खुला दिग्दर्शन उसमें दे दिया था।

सामरजी की तरह सिंघवीजी भी असामयिक विदा हो गये। दोनों अपने-अपने क्षेत्र की विराट वैभववान विभूतियां थीं। भारतीय लोककला संस्कृति के पर्याय होने से पूर्व सामरजी अच्छे गद्यकाव्यकार, नाटककार तथा शिक्षक थे जबकि सिंघवीजी भारतीय विधि-विधान के लब्ध-प्रसिद्ध व्याख्याकार, विवेचक एवं पर्यालोचक होने के साथ-साथ अच्छे कवि, सुलेखक एवं सुविचारक थे। वे दोनों वे ही थे, दूसरे नहीं हो सकते।

(डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी स्मृति ग्रंथ 'दृष्टि में सृष्टि', सन् 2011 से)

स्वर्गिक अनुभूति लिए मजा गिराने का

-डॉ. देवेन्द्र इन्द्रेश-

किसी को गिराने में बड़ा मजा आता है। जो गिरता है उसको भले ही नहीं आता हो, लेकिन जो गिराता है, उसको स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति होती है। आजकल एक-दूसरे को गिराने की स्वस्थ परम्परा देश में धड़ल्ले से चल रही है। अगले को कैसे गिराया जाय इसका गुणा भाग हर एक गिराने वाले के जहन में चलता रहता है।

वह हर दम सोचता रहता है कि किस दांव से अगले को गिराया जाय कि वह मुंह के बल ऐसा गिरे कि कभी उठ ना सके। मगर जो पहले से गिरा हुआ है उसको गिराने में कोई मजा नहीं है। मजा तो उसको गिराने में है जो ऊंचाइयों का छू रहा है और जिसकी उन्नति देख कर लोगों के पेट में मरोड़ उठती है। उसकी टांग खींच कर गिराने का आनन्द अवर्णनीय है। किसी ने कहा है-

गिरते हैं शह-सवार ही मैदान-ए जंग में।
वे तिफ़्ल क्या गिरें, जो घुटनों के बल चलें।।

मतलब है कि जो घोड़े पर चढ़ते हैं वे ही मैदान में लड़ते हैं और गिरते हैं। वह बच्चा क्या गिरे जो घुटनों के बल चलता है। मेरा यह मानना है कि गिरने के लिए घोड़े पर चढ़ना ही जरूरी नहीं है। देश में ऐसे-ऐसे गुरुघंटाल मटरगश्ती कर रहे हैं जो बिना घोड़े चढ़े ही गिरा सकते हैं।

इसमें इन गरुघंटालों का कोई कसूर नहीं है, क्योंकि गिराना उनके हुनर में सम्मिलित है। वे यह अच्छी तरह से जानते हैं कि किसको कब, कहां और कैसे गिराना है?

गिराने का यह धन्धा आजकल हर क्षेत्र में जोरों से चल रहा है। राजनीति इसके लिए सबसे उपजाऊ क्षेत्र है। ऐसे-ऐसे गिराऊ नरपुंगव देश में हैं जो गिराने के पुण्य कार्य में निरन्तर लगे हुए हैं। ऐसे ही रास्ते चलते एक गिराऊ नरपुंगव से भेंट हो गई, जो खुद भी गिरे हुए लग रहे थे। मैंने उनसे यों ही पूछ लिया-'भाई जान, आप क्या काम करते हो, मतलब आपका धन्धा क्या है?'

वे तपाक से बोल- 'गिराने का।' मैं समझा किराने का, मैंने फिर पूछा-'किराने का?' उन्होंने मुस्कराते हुए कहा- 'किराने का नहीं, गिराने का। आजकल यही धन्धा सबसे अधिक फलफूल रहा है।' मैंने आश्चर्य भाव से पूछा- 'किसी को गिराने को आप धन्धा समझते हो।'

उन्होंने फरमाया- 'महाशय, गिराने का यह धन्धा हमारा पुश्तैनी है। हमारे पुरखे भी यही धन्धा करते थे। इस धन्धे में हमारे पुरखों ने बहुत नाम कमाया। आज भी लोग हमारे दादा और परदादा तक को याद करते हैं। उन्होंने ऐसे-ऐसे धुरंधरों को गिराया कि वे मरते दम तक नहीं उठ सके। हमने तो ये सारे गुण अपने पिताश्री से तभी सीख लिये थे जब वे किसी को गिराते तो हमें साथ रखते।'

हमने उन गुरुघंटालजी से कहा- 'किसी को गिराना कोई अच्छी बात तो नहीं है।' उन्होंने आंखें तरेरते कहा- 'अच्छी बात से आपका क्या तमलब है। क्या देश में इस समय सारी अच्छी बातें हो रही हैं? क्या सरकार गिराने का धन्धा नहीं चल रहा है? राजनीतिक पार्टियां एक-दूसरे को गिराने की उठापटक नहीं कर रही हैं? यह गिराने का व्यापार तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धड़ल्ले से चल रहा है और आप फरमा रहे हैं कि यह धन्धा ठीक नहीं है। गिराने के भी अलग-अलग दांव पेच हैं। सरकारें साम, दाम, दण्ड और भेद नीति से गिरायी जाती हैं। किसी को गिराने में लाभ ही लाभ है।'

वे बोले जा रहे थे और हमें गिराने के लाभ समझाए जा रहे थे। गिराने का धन्धा इतना सरल भी नहीं है। किसी को गिराने में भी खूब मेहनत करनी पड़ती है। बिना शारीरिक बल खर्च किये कुछ नहीं मिलता। गिराने के बाद जो आत्म सुख मिलता है, उसका तो कहना ही क्या।

मैंने कहा- गुरुघंटालजी, आप जितना जतन गिराने में करते हो उससे थोड़ा भी यदि देश की महंगाई गिराने में, भ्रष्टाचार गिराने में, पेट्रोल, गैस, बिजली आदि के दाम गिराने में करो तो देश की समस्याएं ही समाप्त हो जाएं।

उसने मुझ से किनारा करते हुए कहा- मान्यवर, जिन चीजों का आप बखान कर रहे हैं उनको गिराना आसान नहीं है। अगर ये गिर जाएंगी तो सब कुछ गिर जायेगा और हमारे हिस्से में जो आना होगा, वह भी नहीं आयेगा। इसलिए मजा तो केवल उठते हुए लोगों को गिराने में है।

धारा 370 के कुछ अनछुए पहलू

-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत-

मोदी-2 सरकार ने 5 अगस्त 2019 को भारतीय संविधान की धारा 370 को निष्प्रभावी करने का ऐतिहासिक फैसला लिया इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करनी चाहिए। अब सम्पूर्ण राष्ट्र में एक संविधान एवं एक तिरंगा होगा। निसंदेह एक देश एक कानून की अवधारणा किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए बेहद जरूरी है इसके लिए मोदी सरकार को साधुवाद।

सबसे पहले मैं यह स्पष्ट कर दूं कि धारा 370 को संविधान से हटाया नहीं गया है। इसको निष्प्रभावी किया गया है। यह अभी भी अस्तित्व में है। मोदी सरकार ने धारा 370 के अनुच्छेद 1 में निहित राष्ट्रपति के अधिकारों के तहत इसी धारा के अनुच्छेद 2 और 3 को राष्ट्रपति के आदेश से समाप्त कर इस धारा को निष्प्रभावी बना दिया। इससे जम्मू कश्मीर को प्राप्त विशेष राज्य का दर्जा समाप्त हो गया है।

धारा 370 को निष्प्रभावी करना एक अच्छा कदम है किन्तु इस धारा को समाप्त करने के पक्ष में प्रधानमंत्री के राष्ट्र के नाम सन्देश में एवं गृहमंत्री ने संसद में जो तर्क प्रस्तुत किए हैं उनकी समीक्षा बेहद जरूरी है

जब सदन में धारा 370 को निष्प्रभावी करने की बहस चल रही थी तब सरकार की तरफ से यह तर्क दिया गया कि धारा 370 की वजह से जम्मू एवं कश्मीर का 1947 से अब तक समुचित विकास नहीं हो पाया है और यह भी कहा गया कि शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक, ढांचागत सुविधाएं, पर्यावरण, पर्यटन आदि क्षेत्रों में उत्तरोत्तर राज्य का ह्रास हुआ है। राज्य की स्थिति बद से बदतर होती गयी। यह भी तर्क दिया गया कि इस धारा के समाप्त होने से एक कश्मीरी लड़की जिसने गैर कश्मीरी लड़के से शादी की है उसे पुन: अपनी संपत्ति में अधिकार मिल जाएगा।

जब इन तर्कों की विवेचना करते तब सदन में धारा 370 की वजह से राज्य के पिछड़ेपन की कही गई बात तथ्य सम्मत नहीं लगती। कारण कि जम्मू एवं कश्मीर की स्थिति अन्य राज्यों से बेहतर है। उनके विकास में यह धारा बाधक नहीं रही। इसका खुलासा इंडिया टुडे के स्टेट्स सर्वे 2018 से हो जाता है। इस रिपोर्ट में बताया गया कि आर्थिक क्षेत्र में जम्मू एवं कश्मीर का सभी राज्यों में दसवां स्थान, ढांचागत सुविधाओं में छठा, शिक्षा के क्षेत्र में आठवां, स्वास्थ्य के क्षेत्र में पांचवां, लॉ एंड ऑर्डर में तीसरा, समावेशी विकास में दसवां, पर्यावरण एवं सफाई में नवां तथा पर्यटन में 11वां स्थान है।

यदि हम मानव विकास सूचकांक की दृष्टि से भी जम्मू एवं कश्मीर को देखें तो देश के औसत सूचकांक एवं गुजरात औसत सूचकांक से भी ज्यादा है। जहां भारत का औसत सूचकांक 0.640 है वहीं जम्मू एवं कश्मीर का 0.684 एवं गुजरात का 0.667 है। 2013 के आंकड़ों के अनुसार जम्मू-कश्मीर में कुल जनसंख्या का केवल 10.35 प्रतिशत हिस्सा ही गरीबी रेखा के नीचे थी। भारत वर्ष में यह 21.93 प्रतिशत है। अन्य राज्यों में जम्मू-कश्मीर से भी ज्यादा लोग गरीबी रेखा से नीचे है। यहां महिलाओं एवं पुरुषों की औसत आयु कर्म से 71.9 वर्ष तथा 68.3 वर्ष है जबकि गुजरात में 71.5 वर्ष एवं 67.3 वर्ष है। यहां गुजरात से तुलना करना इसलिए आवश्यक है कि उसे विकास के मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि अन्य राज्यों की तुलना में जम्मू एवं कश्मीर की स्थिति काफी बेहतर है। संसद में इसकी गलत तस्वीर पेश की गई थी। किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए गलत बयानबाजी अच्छा संदेश नहीं है। इससे लोकतंत्र तार-तार हो जाता है।

संसद में यह भी कहा गया कि धारा 370 के निष्प्रभावी होने से कश्मीरी लड़की जिसने गैर कश्मीरी लड़के से शादी की है उसे पुन: अपनी संपत्ति में अधिकार मिल जाएगा। यह बात भी तथ्यहीन है क्योंकि इस धारा एवं अनुच्छेद में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। यह प्रावधान जम्मू-कश्मीर के संविधान के अनुच्छेद 6 में दिया गया है जो 1927 में राजा हरिसिंह के आदेश का परिणाम था। इसे समाप्त करने का अधिकार जम्मू एवं कश्मीर विधानसभा को है।

सरकार में शीर्ष पदों पर आसीन व्यक्तियों का यह कर्तव्य बनता है कि जो भी तथ्य जनता के दरबार में प्रस्तुत किये जाए वे सत्य की कसौटी पर खरे उतरते हों ताकि एक महान लोकतंत्र की गरिमा को हम अक्षुण्ण बनाए रख सकें।

डॉ. धींग को आचार्य नानेश स्मृति सम्मान

साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को आचार्य नानेश स्मृति सम्मान-2019 से सम्मानित किया जाएगा। यह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान विचार मंच, कोलकाता की ओर से जैनविद्या, साहित्य व अहिंसा के क्षेत्र में उनके सतत, सुदीर्घ व उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया जाएगा।

मंच के सचिव समाजसेवी सरदारमल कांकरिया ने बताया कि 08 दिसम्बर को कोलकाता में होने वाले सम्मान समारोह में डॉ. धींग को एक लाख रूपये की सम्मान-राशि, स्मृति-चिह्न प्रदान किया जाएगा। वर्ष 1986 में स्थापित विचार मंच प्रतिवर्ष विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्टजनों का सम्मान करता है।

सक्का ने बनाया सबसे छोटा सोने का झूला

स्वर्ण शिल्पी इकबाल सक्का ने साम्प्रदायिक सौहार्द्र का परिचय देते हुए जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर सबसे छोटा सोने का झूला बनाकर विश्व का सबसे छोटा स्वर्ण झूला होने का दावा प्रस्तुत किया है। सक्का के अनुसार मात्र 3 गुणा 3 मिलीमीटर साइज के इस झूले का वजन 200 मिलीग्राम है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।